रक्तदान – महादान

प्रस्तावना हमारे देश को "दानियों का देश कहा जाता है। हमारे देश में कई बड़े-बड़े दानी हुये हैं, जिन्होनें अपने समाज के उत्थान के लिये अपने प्राणों तक का बलिदान कर दिया। उदाहरणार्थ कर्ण ने अपने कवचों का दान किया था, जबकि वो जानते थे कि इस दान के बाद उनकी मृत्यु सुनिश्चित है। दधीचि ने राक्षसों के संहार के लिये अपनी अस्थियों का बलिदान कर दिया। परंतु इन सब दानों से बड़ा है - रक्तदान। रक्तदान के द्वारा किसी की असमय मृत्यु को बचाया जा सकता है। इसीलिये शायद रक्तदान को महादान कहा गया है।

रक्त की संरचना "रक्त वह तरल संयोजी ऊतक है, जो परिसंचरण तंत्र में भ्रमण करता है।" रक्त दो तत्वों से मिलकर बनता है।

1. प्लाज्मा
2. रूधिर या रक्त कणिकाएँ

1. **प्लाज्मा** :- प्लाज्मा रक्त का निर्जीव भाग होता है, लेकिन रक्त का 55-60 प्रतिशत भाग इसी का बना होता है। यह रंगहीन होता है। इसकी संरचना जटिल होती है क्योंकि यह निरंतर एक पदार्थ ऊतक को देता रहता है।
2. **रक्त कणिकाएँ** :- रक्त का 40 प्रतिशत भाग कणिकाओं का बना होता है। ये तीन प्रकार की होती हैं।

   लाल रक्त कणिकायें
   श्वेत रक्त कणिकाएँ
   थ्रम्बोसाइट

   (1) लाल रक्त कणिकाएँ गोल या अण्डाकार होती हैं। ये रंगहीन होती हैं परंतु बहुत अधिक लाल रक्त कणिकाएँ मिलकर लाल रंग की दिखाई देती हैं।

   (2) श्वेत रक्त कणिकाएँ अमीबा के समान अनियमित आकार की होती हैं। ये लाल रक्त कणिकाओं से बड़ी तथा बहुत कम मात्रा में होती हैं ये रंगहीन होती हैं।

   (3) थ्रम्बोसाइट 2 म्यू से 4 म्यू के आकार के होते हैं 1 घन मिमी रक्त में 2.5 थ्रम्बोसाइट पाये जाते हैं।

भविष्य में रक्त की आवश्यकता रक्तदान करने पर रक्त को सुरक्षित रख लिया जाता है और जब किसी घायल व्यक्ति या किसी रोगी के शरीर में रक्त की कमी हो जाती है तो उस ग्रुप के व्यक्ति का रक्त उस रोगी व्यक्ति को चढ़ाकर उसके शरीर में रक्त की कमी को पूरा किया जाता है। इस प्रकार रक्त को आपातकालीन स्थिति में प्रयोग किया जाता है और किसी व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है।

रक्त के ग्रुपों का वर्णन

रक्त 8 ग्रुप का होता है जो निम्नानुसार है

1.	A+	2.	A-	3.	B+	4.	B-
5.	AB+	6.	AB-	7.	O+	8.	O-

O+ का व्यक्ति किसी भी व्यक्ति को रक्तदान कर सकता है पर रक्त ग्रहण केवल अपने ही ग्रुप के व्यक्ति से कर सकता है। परंतु AB+ ग्रुप का व्यक्ति रक्त ग्रहण तो किसी भी ग्रुप के व्यक्ति से कर सकता है लेकिन देता केवल अपने ही ग्रुप के व्यक्ति को है। इसके अतिरिक्त अन्य ग्रुप के व्यक्ति अपने ही ग्रुप के व्यक्ति से रक्त का आदान प्रदान कर सकते हैं।

समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में रक्तदान की भूमिका

समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में रक्तदान की एक बहुत महत्तवपूर्ण भूमिका है। रक्तदान करने से न केवल किसी व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है, अपितु रक्तदान के द्वारा हमारे अंदर समाज व राष्ट्र के लिये कुछ कर गुजरने का उत्साह पैदा होता है और रक्तदान करने से लोगों को यह प्रेरणा मिलती है कि समाज व देश के लिये कुछ करेन का यह बहुत अच्छा तरीका है। रक्तदान कर हम निश्चित रूप से किसी न किसी व्यक्ति के जीवन की रक्षा करते हैं। अर्थात रक्तदान का अर्थ है जीवनदान। इसीलिये यह एक महादान है।

रक्तदान किसे करना चाहिये ?

1. रक्तदान करने वाले व्यक्ति की अवस्था कम से कम 18 वर्ष हो क्योंकि इससे कम अवस्था में व्यक्ति रक्तदान करने के योग्य नहीं हो पाता।
2. रक्तदान करने वाला व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ और शारीरिक रूप से हष्ट-पुष्ट हो।
3. रक्तदान करने वाला व्यक्ति किसी भी संक्रामक रोग से पीडित न हो अन्यथा जिस व्यक्ति को रक्तदान किया जा रहा है वह भी उस रोग से पीड़ित हो सकता है।
4. रक्तदान करने वाला व्यक्ति किसी भी तरह के व्यसन में लिप्त न हो अर्थात वह शराब, सिगरेट इत्यादि से दूर रहने वाला ही हो।

रक्तदान संबंधी भ्रांतियाँ व निराकरण

1. लोगों के मन में यह धारणा रहती है कि रक्तदान करने के बाद उनके शरीर में रक्त की कमी आ सकती है जिसके कारण उनके शरीर में कमजोरी बढ़ सकती है, परंतु ऐसा नहीं है, रक्त की पूर्ति हमारा शरीर 3 महीने के अंदर कर लेता है और हम पुनः रक्तदान कर सकते हैं।
2. लोगों का यह मानना है कि रक्त निकालते समय अधिक रक्त निकाल लिया जाता है परंतु ऐसा नहीं है, रक्त की केवल 300 मिली मात्रा हमारे शरीर से निकाली जाती है जिसका हमारे शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि हमारे शरीर में 5 लीटर रक्त पाया जाता है।

रक्तदान के प्रकार

(अ) DTP (Direct to Patient) - इसमें रक्तदाता और रक्तग्राही को एक साथ अगल-बगल में बिठाकर रक्तदाता से रक्त निकालकर सीधे रक्तग्राही को चढ़ाया जाता है।

(ब) EOB (Exchange of Blood) - इसमें रक्तकोष में अपना रक्त देकर, रक्तकोष से आवश्यकतानुसार ग्रुप का रक्त निकालकर रक्तग्राही को दिया जाता है।

(स) Saving the Blood in Blood Bank - इसमें रक्त कोष में रक्त को भविष्य के लिये सुरक्षित रख लिया जाता है और आपातकालीन स्थिति में, जब किसी व्यक्ति को रक्त की आवश्यकता होती है, रक्त दिया जाता है।

रक्तदान की दीर्घकालीन उपयोगिता

1. रक्त घाव भरने में सहायक होता है।
2. रक्त में पोषक तत्व पाये जाते हैं।
3. उत्सर्जी तथा अवशोषी पदार्थ के संवहन।
4. विभिन्न रोगों से रक्षा करने में सहायक होता है।
5. ऑक्सीजन, कार्बन-डाइ-ऑक्साइड के संवहन में।

उपसंहार अंततः स्पष्ट है कि रक्तदान एक महादान है। परंतु रक्तदान धन के लिये नहीं किया जाना चाहिये। कुछ व्यक्ति रक्तदान धन के लिये किया करते हैं। परंतु रक्तदान एक जीवनदान है और जीवनदान धन के लिये नहीं किया जाता है अर्थात रक्तदान धन के लिये न करके मानवता के लिये किया जाना चाहिये। रक्तदान को यदि हम धन के तराजू में तौलेंगे तो निश्चित रूप से इस महादान का अपमान होगा।

अतः हम सब को चाहिये कि हम रक्तदान करें और अपने मानव जीवन को सफल बनायें। यह जीवन अनमोल है और इसे व्यर्थ न गंवायें। अतः हम सभी को चाहिये कि हम जीवन में कम से कम एक बार और अधिक से अधिक हर तीन महीने में एक बार रक्तदान अवश्य करें ताकि हमारा मनुष्य जीवन सफल हो सके। जब मैं 18 वर्ष की अवस्था पूर्ण कर लूँगा, रक्तदान अवश्य करूँगा।

सभी दानों में से है एक महत्त्वपूर्ण दान वह दान है रक्तदान।